











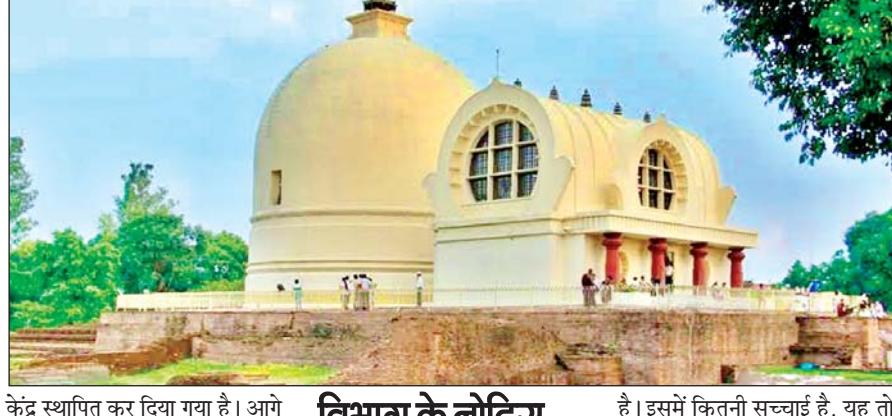


संक्षेप  
विद्युत समस्याओं को  
लेकर सपा कार्यकर्ताओं  
ने सौंपा ज्ञापन

कुशीनगर। विद्युत की समस्याओं को  
लेकर सपा पदाधिकारी और  
कार्यकर्ताओं ने राजें प्रताप राव उर्फ  
बटी राव के नेतृत्व में विद्युत वितरण  
खण्ड कंपनी का घेरा किया। वहाँ  
अधीक्षण अधिकारी जो ज्ञापन की सौंप  
विद्युत समस्याओं के समाधान की मांग  
की सीमावाली को सपा पदाधिकारी और  
कार्यकर्ताओं ने विद्युत वितरण खण्ड कंपनी  
कार्यालय पर नारे बाजी करते हुए हूँचे  
और धरने पर बैठ गए। सपा नेता राजें  
प्रताप राव ने कहा कि विद्युत कटौती,  
लो बोल्टज, जर्जर तार ट्रांसफार्मर  
टांक नहीं होने से उभोका त्रस्त है।  
जिला अध्यक्ष शुक्रलुहान अंसारी ने  
कहा कि आमतौर पर लेकिए सपा  
पूरे देश में स्थानीय बोर्ड ही है। नेताओं ने  
कहा कि अपर विद्युत समस्याओं का  
समाधान नहीं होता है तो व्यापक  
आंदोलन किया जाएगा। सपा नेता और  
नेताओं ने अधीक्षण अधिकारी को सौंपे  
कहा गया कि कुशीनगर विधानसभा  
से संबंधित बिजली विभाग के विभिन्न  
फोर्डों की कूबेरथान, कसवा,  
साखोवार, साठा साठिया, पड़ौरी,  
रामकोला टैकी आटर, गोलगढ़,  
कुशीनगर, रामभार में उभोका त्रस्त  
को विद्युत आपूर्ति होती है। लेकिन  
विद्युत समस्याओं से उभोका पेशान  
है। कहिया हजारी पट्टी में बिजली  
विभाग की लापरवाही से सर्वांगी होन्द्रे  
मिले आर्थिक सहायता को अभिलंब  
तिक्कत मंदिर का मंदिर, भवन,  
कुहारीदारी, पथिक निवास के  
सुरुक्किकरण, इंटरनेशनल गेस्ट हाउस,  
फास्ट फूड सेंटर, पार्किंग के कमरे,  
प्रसादावार आदि सहित अच्युत अवैध  
अंसारी, नवी हसन बाबू अमेरिकन  
खरवार मौजूद रहे।

# राष्ट्रीय स्मारक संरक्षण कानून की धर्मियां उड़ी, हो गए अवैध निर्माण

जिला सवाददाता(VOI)



केंद्र स्थापित कर दिया गया है। आगे

बुद्धी मांग पर रामभार स्तूप के समीप  
सिद्धार्थ गेट हाउस, श्रीलक्ष्मी मंदिर का  
पूर्ण निर्माण हुआ है, तो वही विभिन्न  
मौनस्त्रियों ने भी अपने विहारों का  
निर्माण कर दिया है। इन सभी निर्माणों  
को रोकने के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की महापरिनिर्वाचन स्थली का मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए एनआरी दर्जनों  
पर विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जाना, कहीं  
न कही जिम्मेदारों की अनुमति पर  
बड़ा सवाल खड़ा करता है।

● सभी निर्माणों को रोकने के लिए पुरातत्व विभाग ने भेजा नोटिस

कुशीनगर में तीन स्तूप राष्ट्रीय स्मारक की  
घासित है। जिनमें बुद्ध की मुख्य मंदिर  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
कुहारी और अमुक्त बंधन चैव के  
रामभार स्तूप भी कहा जाता है।

संरक्षण कानून 1992 लागू होने के बाद

बिना एनआरी दर्जनों निर्माण अवैध

हैं। कहिया हजारी पट्टी में बिजली

विभाग के लिए स्थानीय पुरातत्व  
विभाग के द्वारा नोटिस कर अपनी  
जिम्मेदारी का इति श्री कर दिया जाता

है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो

जाच के बाद ही पुष्ट होगा, लेकिन  
विभाग द्वारा बार-बार नोटिस भेजने के  
बाद भी राष्ट्रीय स्मारकों के वर्जित क्षेत्र  
में निर्माण कार्य कराया जान





## विकास और रोजगार

**भा** रत की आर्थिक विकास दर बढ़ रही है, लेकिन रोजगार रहित विकास ने देश में गंभीर सामाजिक-आर्थिक संकट को जन्म दिया। बड़े-बड़े उदयम लग रहे हैं लेकिन

रोजगार नहीं है। इससे बोलगारी और आर्थिक विषमता का संकट बढ़ा है। ऐसे में सरकार को विकास के साथ अवसरों को सुनित करने के लिए रोजगार केन्द्रित उद्यमों को बढ़ावा देना होगा ताकि विकास के साथ रोजगार के मौके भी बढ़ें। भारत की अर्थव्यवस्था फिल्हाल चार दिवियन के करीब पहुंच गयी है और अगर वर्तमान गति से आगे बढ़ती रही है, तो अगले एक दशक में न सिर्फ भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा बल्कि अर्थव्यवस्था का आकार भी आठ-दस दिवियन हो जायेगा। हालांकि हमारा विकास अगे भी तेज गति से जारी रहेगा क्योंकि भारत सरकार का लक्ष्य 2047 तक देश की विकासित राष्ट्रीय की श्रृंगार में लाकर खड़ा करना है। उद्धरणाल अगर हम दो-दो दशक के अंतराल के बायाँ अगले एक दशक के आर्थिक परिदृश्य में हाँ चाहीं करें, तो सात-आठ फीसदी की गति से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था में न सिर्फ

एमएसएपई के लिए बड़े

ऐसा नहीं है। अवसर बन रहे हैं

बल्कि स्टार्टअप से लेकर

बृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था गेम चेंजर बनी

हुई है। सरकार अर्थव्यवस्था

में एमएसएपई की भागीदारी

50 तक प्रोसेस बढ़ावा ले जाना

चाहीं है। फिल्हाल अभी

यह आँकड़ा तीस फीसद पर

है। लोकनं जिस तरह बड़े

आकार के उद्यम ऑपेरेटर्स

हो रहे हैं, हाँ ग्रोथ, रेवेन्यू

और मुनाफे की तुलना में

रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं, उससे एक बात स्पष्ट है कि भारत आर्थिक महासंकट कब बनता है, 1947 तक भारत विकासित देश बन पाता है या नहीं, मध्यम आया वाली अर्थव्यवस्था में संपर्क समय के लिए, ये तापामात्रा अपनी जगह पर है और इनका जबाब समय के गर्भ में है। लोकन एक बात पूरी तरह सफल है कि अगर भारत को संपूर्ण रोजगार के लक्ष्य को हासिल करना है, तो इसका रासायनिक एमएसएपई सेक्टर ही प्रगत कर सकता है। एमएसएपई जॉब ओपेरेटर्स सेक्टर है और इनका जबाब देने के लिए बड़े आकार के उद्यमों के साथ स्टार्टअप सभी

प्रगति और अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े

उद्यमों के साथ स्टार्टअप से लेकर

वृहद आकार के उद्यमों तक

के लिए भारतीय

अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण बड़े











